

ASPA ARCHIVES

326

I

ASPA ARCHIVES













स्वाहा॥ ॐ वज्रगंधस्वाहा॥ ॐ वज्रध्वजस्वाहा॥ ॐ वज्र
दीपस्वाहा॥ ॐ वज्रनेत्रस्वाहा॥ ॐ वज्रलाजाय
स्वाहा॥ ॥ अकालमूर्खसर्वधर्माधीना अनृत्य
नस्वाहा॥ ॥ ॐ श्रीः॥ वलिमूर्धिताना॥ ॥ ॐ स
प्रतिष्ठितवज्रस्वाहा॥ ॥ ॐ श्रीः॥ महलाधिष्ठान॥ ॥
यावत्तन्मधनमनु॥ ॥ ॐ ह्रीं॥ की॥ श्रीः॥ स्वस्वाहा॥

पुनः पाठ्यं भूनामीहावयन्॥ कीं कालशयनलीकन
मी कालशयनलीकन॥ दिव्यजीवजवज्रहस्ती॥ ॐ
कालशयनलीकन॥ दिव्यजीवजवज्रहस्ती॥ ॐ
या लगनमहाजागशयनीरुनयलेष्वन्॥ पुनः ह्रीं
ह्रीं॥ कीं॥ श्रीः॥ स्वस्वाहा॥ ॐ सर्वे कालमिनि सर्वे
लक्ष्मिनिः सर्वजीवि काश्चिन्मन्त्रे सर्वे दयवापिः

[illegible][illegible]

महेश्वराय नमः ॥ यन्निष्कृष्टं कान्तं मातृकान्तं कान्तं कान्तं
नैष्ठिकं कान्तं कान्तं कान्तं ॥ आलिकालियकित्तं
यत्तु कान्तं कान्तं वसन्त्याय ॥ दत्तं नपयिष्ये न
वक्रयन्मवज्जवाग्विभुद्धिं कान्तं नृपस्कंधवैष्या
वनवदनास्कंधवज्जसूर्यसंहानेस्कंधवपमानुष्ट
म्वनसंस्कान्तस्कंधवज्जनाऊविहानस्कंधवज्जस

त्या॥ सर्वमथ गगनधी हनुक वज्र॥ वज्र धामा हवजी
 रथमन्या ध्रुव वज्र॥ प्राग्गयात्री ध्यात्री॥ वज्र धामा
 गवजी स्यरेर्ध नमात्स र्यवजी॥ सर्वान्याने ध्ये स्य र्य
 वजी पृथ्वी धागु पागनी क्षाय धागुमानशी॥ न जा धा
 गुजा कर्षणी वायु धागु यमनतृट् ध्वनी॥ आकाश धा
 गु यमन कालिनी॥ ॥ पूजना साहित्य कालिया कि

[illegible][illegible]

दिनीवजीरुवजवंधव॥ अं वं ऊं प्राकान ऊं ख ऊं ॥ अं
व ऊं य ऊं र्ज ऊं य ऊं ॥ अं व ऊं वीमान ऊं ख ऊं ॥ अं व ऊं म
ज ऊं ल ऊं श ऊं र्ज ऊं ॥ अं व ऊं कालान ला ऊं र्ज ऊं ॥ ऊं कालजा
नादिग प्राकान समीकृत यानि वा मि दानू ॥ १५ ॥ अं व ऊं आदि
विप्रावृक्षदय को ल य म ॥ अं य य पा ट य र स वे इ ह
न ऊं रू रू ॥ अं की ल य र स र्ज पा न न य न य रू रू ॥ अं व

ऊं की ल य र स र्ज पा न न य न य रू रू ॥ अं व ऊं कालान ला ऊं र्ज ऊं ॥ ऊं कालजा
नादिग प्राकान समीकृत यानि वा मि दानू ॥ १५ ॥ अं व ऊं आदि
विप्रावृक्षदय को ल य म ॥ अं य य पा ट य र स वे इ ह
न ऊं रू रू ॥ अं की ल य र स र्ज पा न न य न य रू रू ॥ अं व

संरुद्धीजलभिमात्तारिजाकृष्णहानवकीआकाश
दलदृष्टाअहिसुरवमहिसीपुत्रीसमरुसमयमशु
लप्रवरम्समजगीकृष्णमनामयीहिरप्रजादवीहि
श्वप्रकयक॥ ॥ हूं हूं हूं ॥ ओं श्रीवज्रहहहृन्नृकप्र
वनसस्कात्राययायायावमनीप्रांक्रमनीप्रतिकस्वा
हा॥ ज० हूं १ वं ३ हां ३ ॥ ॥ मधुलवपूर्य्याभं ॥ ॥

ओं श्रीवज्रहहहृन्नृकहूं हूं अकिनीजालसस्वनीस्वाहा
ओं कीं १ हूं हूं हूं हूं स्वाहा॥ ओं ओं ओं सर्ववृद्धाकिनी
यवजवर्हनीयवज्रवेजावनीयहूं हूं हूं हूं हूं हूं
हूं हूं स्वाहा॥ ॥ धाल ३ दृष्टा ॥ ॥ ओं अकिनी
यहूं हूं हूं स्वाहा॥ ॥ ॥ ओं लामहूं हूं हूं स्वाहा॥

बलाम्बिगसुजातकयीयकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं गूं
ऊं शसकंपागालगककुं जीगसय्यबामऊं यं २४॥ गा
दवीयकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं आं कययसससससस रुद्र
स्वाहा॥ ओं कीं १२ हयकरूं कूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं हूं श्व
माननं कूं कूं रुद्रस्वाहा॥ कूं निवाकवकी॥ ८॥ ओं आं श्व
कवीगकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं हां श्वधुनीरुं कूं कूं रुद्र

स्वाहा॥ ओं कीं १२ सोलिनीयकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं कूं कूं
वक्रवर्हिनीयकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं किलि २ महावले
कूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं धिलि २ महावीनकूं कूं रुद्रस्वाहा॥
ओं धिलि २ वक्रवर्हिनीयकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं हिलि २
महादवीयकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ कूं निवाकवकी॥ ८॥
ओं काकास्यकूं कूं रुद्रस्वाहा॥ ओं उलकास्यकूं रुद्र

[illegible]

करु जवाय स्वाहा ॥ ॐ अट्ट हहासाय स्वाहा ॥ ॐ ल
 श्री वन रु मा सताय स्वाहा ॥ ॐ धा जी धि का जाय स्वा
 हा ॥ ॐ किलि कि लाल वाय स्वाहा ॥ ॐ कि भ भ भ न
 ॥ ८ ॥ यं शाय वा ज पु जा ॥ ला भ ॥ ॥ ॐ वज्र वी
 र भ ॥ ॐ वज्र वी र भ ॥ ॐ वज्र म र्द ग की ॥ ॐ व
 ज्र म ज्र म ॥ ८ ॥ ॐ वज्र म र्द ग की ॥ ॐ वज्र म

लार्पयायचानपुञ्जा॥ सुमि ॥ ॥ यामिन्नाखल
माहन्तीरुगवकीसंवाजिशीसर्वदा॥ सन्नासिन्यसकथ
ययास्विसमलायागन्धत्रीचलिका॥ वलानाकुजजक
स्नानमूर्खीनीलाभीमागोजिधी॥ ग्यामाधुमाधुसद
गाम्भलाकनर्विदरवीमाहर्वी॥ उत्थादरुगमहेनीवेन
दहवाजिशी॥ जकप्रहाविजयिनीचिदिमकुपूषी॥

वज्रीगम्भगुणगारो॥ समलीकृमीगीअर्यत्रयामिध
कनैजननीजिनी॥ ॥ मकुनय्यश॥ ॥ ॐ नमो रुगव
निवजवाहाहिहं हं रुद्र॥ ॐ नमो रुगवनिअजिऊम
यजाजिऊलाकमाकनैहं हं रुद्र॥ ॐ नमो सर्वरु
कहयायहमहावजहं हं रुद्र॥ ॐ नमो वजासनअ
जिऊअपजाजिऊवधकविनयजासिनिहं हं रुद्र॥

ॐ त्रायनिभाषनिकाधनिकमालिनिर्कं कं रुद्र ॥ ३ ॥
संक्रांतिनिमाननिसप्ररुद्रिनिषमाजयकं कं रुद्र
॥ ३ ॥ ॐ नमाजयविजयजमकनिककनिमाहानिकं कं
रुद्र ॥ ३ ॥ ॐ नमावजिधिवजवाजहिजयगोनिका
संध्यविखलकं कं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ अष्टयदमकं
निधनाकजशदृष्टिदृष्ट्यानि ॥ ॥ मन्त्रपापदधना

कमकात्रिकमनूमादिनमधमखिलनिहिकदाः
षातीप्रतिदधमामिपयमयवजयवसमन्त्रजः
विदधधमवकधवप्रजिनोरुमाजिनसमसंरुगा
नि ॥ कृष्णालानिअनूमादिगानिवाधोसम्यकयोजि
समयोमिजिनजलानिनिविप्रयधनधनयानगंभीसि
सर्वरावनवाधोविदधधमनरुनगमधमसव

दि॥ ॥ ६६ ॥ आदित्याग॥ ॥ नमो नमो कनक्षुभ
दिनायका यमुवस्तुविहानान्तविहायथन॥ ३० स्व
रावमुद्राः सवधन्मा शिखको यमुद्राः ॥ ३१ ॥ मूल्यानी
हान्तवज्रवलावात्मकाः ॥ ३२ ॥ विहमाद्रुवकी
स्त्रुवाधिसीतानप्रजयन नमो यत्रिध्यानवसोक्त
यमावाविवधः ॥ ३३ ॥ यकोनशवायूमल धन्यो

हंतीलभजाहर्नमद्रुयत्रिर्वकाजश अग्निमल
लं द्विकोशं वकनकाहर्न ॥ नद्रुयत्रिर्वकाजशव
नशमल्लवर्कलं रवमद्रुयत्रिर्वका
नशयुधिवामल्लवर्कलं सुयीनका रमेशप्रभूवि
कवजाकिनी ॥ नद्रुयत्रिर्वकाजशसमवर्कलं सुच
नल्लमयं नद्रुयत्रिर्वकाजशसमवर्कलं सुच

चक्रसम्बर पूजा विधि

७-२८

हाकृ पागम श्रीय नुज भव नुजा नव नुह गाज शरणा
हिरण्य नाच हास व क लो क म गी र्ध य यै नै ॥ न ड
य त्रिय का ज श वि श्व य म्नी क न्ना र्था कृ का ज श वि श्व
व डी न न्ना र्था पं का ज श श कृ द र्था वि श्व य म्नी ॥ न ड
वि श्व लिका लि द्वि गुर श य नु न श ली र्ध य म्नी ॥
न यी र्ध य म्नी का र्था र्था कृ का ज श र्था र्था र्था

हं जान स जात कुधी ॥ अग्नि या कलि (ग सर रु ड ४ भा ना
द बी ने स म्या ल या क व ऊ प्र रु सर रु ड ४ वा यू या त्रि यून
म हा रु न व ह य क र्हु ॥ ४४ ॥ न्या हि ना ल य वि यू पा क
ख ग न नी ॥ ४५ ॥ नि वा क व क ॥ ॥ रु नी य का य व क ॥
सू रा ले शु क्ती शु क्ती ये का व ली अ ली रु री ॥ न स्य प्र
वै द्या न प्र न प्र यो मि हा व ल व क व र्ग ॥ ४६ ॥ न गु म द

व ना या न त्र व ऊ ख थु जा हा ॥ प श्चि म सो ना ड्र ह य ग्री
व सो थु नी ॥ द ड्रि ॥ स स व र्हु दी प आ का श ग र्हु व
क व र्हु नी अग्नि या नि ग न थी ह च क स र वी जी नै अ
म्या सि ॥ ध य प्र नु ट ४ व र्ज म हा व ली ॥ वा यू या मि जी
वै वा च नै व क व र्हु नी ॥ ४७ ॥ न्या कू ल ना या वि ऊ स म
हा वी र्णी ॥ ४८ ॥ नि का य व क ॥ ॥ ख थु क पा ला द

यावीजाचकवकुावहुहुजादिनडाजटासंकुटीन
आलीगनहुहुदयनसुवहुवहुधु। वामकापन
हुहुदयनखद्योगमदकि॥ हुमजकी यक्ष मूडा
दिगीवजी॥ आलीढासनलिना प्रवेधु। दवाप्रः
कवकुादि हुजा आलीगश कपालरुला॥ दकि॥
हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं हं

११ वज्रकर्हिका दिनवात्रो डनूपिनी मकुटकम्
सूक्ष्मयथागममायन्ता दिगैव जायते मन्त्रावित्त
विना ॥ ॥ मूथपृथ्वीदिज्ञान ॥ काकास्याहः
उल्लाकास्याब्धमाब्धनास्याजकाब्धकनास्या
यीना ॥ ॥ मूथपृथ्वीदिषू ॥ यमडाटीकृष्टयीना
यमडनीयीननकायमडिष्टीनकाब्धमाय

[illegible]

ॐ कर्म हित वक्तुम् ॥ ॐ नमः सर्ववीजया गया
गिनी कायवाक्य विह्वल स्वरात्मकी ॥ प्रवृ
वर्द्धमान्या ॥ ३ ॥ ॥ ॐ नमः हिस्साहा ॥ नमो वाष
टह ॥ नमो नमो हा ॥ नमो नमो टह ॥ ॐ नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो

धम्मो नरिया गणु को इह ॥ न क ३ समानी न हान यक
आ का म द र ७ दृ द्वा ॥ ज ३ ई वं हा ३ ॥ आत्मान न म ७
ले षू षू न ना रु शानि धाय ॥ उ व ३ उ ७ आ स र्व ध म्मा ॥
व ३ उ ७ को इह ॥ न ना अरि वि श्र रु मा ॥ उ स र्व वी न
या ग या मि नी य धा हि जा न मा उ धे स्ता पि ना स र्व ग थ
ग क स थ ॥ ह स्ता य पि श मि भु च्च दि श न वा नि धा ॥ उ

आ ३ स र्व ग थ ग क अरि क स म थि य र्हु ॥ अरि ध क म
हा व ३ उ ७ धा रु क न म र्हु रु य मा के पू ३ ना थ य म क
द य ३ क ना रु वी ॥ ॥ उ स र्व व द्वा उ म शि म हा म
क ३ य ३ ध र्हु ॥ उ व ३ उ ७ न ग थ नी अरि वि श्र रु ॥ उ व
उ व ३ उ ७ अरि वि श्र रु ॥ उ न त्त व ३ उ ७ अरि वि
श्र रु ॥ उ ३ ध म्म वि रु धी अरि वि श्र रु ॥ उ क म व ३

श्री अहिषिचः ३४॥ अथाहिषिकस्त्वमसिबुद्धवर्जा
 हिषिकमः॥ ५० दन्तसर्ववृद्धात्वं गृह्यवजसमसिद्ध
 यम्॥ वजाधियमिस्त्वामहिषिचः॥ मिनिष्ठवजसम
 यस्त्वहः॥ वज्रयः॥ ५१॥ वज्रसत्त्वास्त्वामहि
 षिचामिवज्रनामाहिषिकमः॥ ॥ श्रीहृदयकवज
 नामनथागरुडिवरस्ये॥ ॥ पूर्ववदाकं वधया

आदिपृथ्वीनामयवाः॥ पञ्चमपुञ्जाः॥ लावध्याद्यः
 स्थावादनस्कुमि॥ ॥ श्रीवज्रसन्धजससम्बजवज्र
 जकवीजः॥ जिषववीजगधधित्राजः॥ कालाननल
 शिन्वाकूयः॥ प्रगूठकाजः॥ निरुजः॥ शमामिर्नः॥
 वीधियमनः॥ ॥ लकुनप्यधः॥ ॥ ठकिसधुलादि
 कीययागः॥ ॥ कमाः॥ कालिकालियोकपयः॥

भिकास्तु चंद्रवर्गाद्यन्तर्जायते ॥ दक्षिण
वायुना निरुक्तं कुम्भमिव विहृतं सन्नादितं तं
द्विषीत्यक्रसम्बन्धवीजवीजधीसमासि ह्येवम
नाम् ॥ पृष्ठेन प्रविष्टम् ॥ नागो प्रविष्टो नृपः स
यत्नमस्तु लीहन्तीति विदितम् ॥ नद्यामि शुक्लं कृष्णं
वसुवीजं यन्निशेनं नृगवर्गं सहजं सम्बन्धं शुक्लं

द्विजुजैकमरवीवजयधधर्जभालीकासनहं३
 आकाशविरुसवजकयालवजीद्विजुजैकमरवी
 जकवजवागोहिसमायन्नविकाया॥कयासायास
 धनिसमाकृष्टिभक्तुकात्तकीवकसीवतावयक
 ॥जगामिभभानेयभभनानिसमयदकसमय
 वरुकाकास्यादिषुकाकास्यादयपलमय

कायसर्कः वाक्यवयववाक्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यव
 र्ववयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यव
 सौभाग्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यव
 यागवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यवयवविभक्त्यव
 धर्मसिद्धिजायकमकारलसदृष्टिद्विजायकमकारलसदृष्टिद्विजायक
 स्वमयिजायकमकारलसदृष्टिद्विजायकमकारलसदृष्टिद्विजायक

श्रीगुरुदेव्यं दं मुनिवर्द्धिर्विदोर्विदोर्नादनादना
 दवाजाग्यं धर्मसहस्रमुखागवर्षानिर्विकल्पमहास
 खमयीविरुजिन्मययकभापनस्तत्त्वार्थशक्ति
 मधुलमाक्षिभूतः ॥ पूर्ववदोक्तवैशेष्याद्या
 भाग्यं लाघीरुका ॥ लूनिभुक्त्यागः ॥ गौतम
 जापः ॥ आकवैशेष्याद्याभाग्यं लाघीरुका ॥ ॥

वर्हिन्वावीजवीजध्वनीह्यनामममानीयममः
वाङ्मयप्रविष्टविनयम॥ ॥ॐ आरहं॥ न
लिअधिष्ठान॥ आरुर्वशेषाद्यादिप्रव्यन्या॥
यंलायुक्तु॥ ॥मनाआलिकालियनिधुक्त
यस्यस्यरावकजद्वयानेगीमाङ्ककार्जदृष्ट
॥ॐ अन्वा नान्गनासर्वधर्मा॥ॐ यजस्यजान्

गनासर्वधर्मा॥ अन्वा नान्गनासर्वधर्मा॥ ६
यजमानसमयप्रमोर्गदृक् वावप्रयजप्र
माधी॥ प्रकनसमनरुवयजगी६ व्याममान
गहहृरुर्गगीरेवधुक्तिकानादवजालीले
ऊ३ र्गवह॥१॥ वजंताकिन्यसमयस्त्वदृष्टधर्मा॥
स्वाङ्किलेखवलिरुयक॥ॐ कन३ कन३

326	I
-----	---

प्रकृतिमात्रादायमात्रजाकडाकिन्यादयश्च
 वृत्तवर्तिगुणकुसमयनकुसुसर्वसिद्धिनेप्रय
 कृत्वाथेवयारथेष्टकुसुथयिवथकिप्रथमादि
 क्रमथममसर्वसत्त्वानाञ्चसर्वाकाजनयास
 त्तरवप्रवृत्त्यसहाजकारुवन्कुर्तुंरुदृष्ट
 स्वाहा॥पञ्चायवाजपूजा॥लाभ्यमायम्भवादि

नमस्तुभ्यो यीशु भद्रिष्टुता ॥ स्वानमनो ॥ आशीर्वाः
द ॥ धामा कुज ॥ कुमायेश ॥ ॥ स पाक्या यत्रि
हानाय दक्षक वनया विहा ॥ इति सत्यं वरुणी ॥ ॥
अनमः श्री उग्रका जाये ॥ प्रकुरु दायनमः ॥ कुरु
दिक विदु र्यनत्वा यागिना कुप्रका कनी श्रीमद्रूपका
जाये वरुणी ॥ इति सत्यं वरुणी ॥ ॥

हावयक उका मद्रय हानि यका जह रुवर्कि रंगाका
जनेय नो धर्म जाका जह रिक मः कविम ॥ सर्व सत्त्वाः
अजक्षरुता ॥ इति सत्यं वरुणी ॥ ॥
ह ॥ कदन्त कनर ॥ धन न्यादि ॥ ॥ उक्ता स्वाहा वरुणी ॥
हो ॥ स्वाहा दक्ष वरुणी सत्यं न्यादि ॥ ॥ पञ्चाधिसुनी ॥
उक्ता यागिनी यद् ॥ इति सत्यं वरुणी ॥ ॥ उक्ता ॥ इति सत्यं वरुणी ॥

मीशिनजीविमरुवीदियानीलानीलविजाकिनी
जकवरुजजिननानीनागभरुकविरुषिनीनवयो
नवनसंयन्नां व्याप्रवर्मकटिबुनीयंयमडावि
रुषिनीविदुऊनलजिडाईका निधीईडोकर
महालीमालियस्यापिरुयीकनीखड्यायकर
संयवासात्यलविंदमधुकीयिरुगसयकऊटायुनीम

ऊह्यमोलिमिधुनी॥प्रणातीठयदाघाजामधुमा
लाप्रलामिनीखरुलवादजाहीमानीलनीलऊसनि
नी॥सुवकेकमरुवीदियाधोनाइहासंलासनीसुः
प्रहृष्टीषवाचूढीनागभरुकविरुषिनीजकवरुद
लनजीवियायुवमार्चकाकडीनवयोवनसंयन्नां
यंयमडाविरुषिनीविदुऊनलजिडीईडोकर

दलीपधरिव ऊक रुधनासवामात्यलकपालिनी
 पिरगागोक ऊर्य धायाकमोलावकाह्यरुधिमिनी ॥ वि
 इविय ॥ उंरुनी रुरुं ॥ २५ ॥ रावना ॥ स्व
 हीऊविनिर्गककिनधगरीजाऊरुधरावकिवेजा
 वनघानेश ऊरुधवडधानीयामन्युयसहजक ॥
 रुं ॥ श्री ३ उयमानावऊयागिनी रुधनिकायेयाधा

ध्यायमानं प्रणिच्छत्वा हा॥ ऊं हूं वं हा॥ स्त्रानवा
 या॥ उं ऊं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥ ऊं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥
 उं ऊं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥ उं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥
 स्त्रानवा॥ म॥ स॥ उं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥ उं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥
 उं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥ उं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥
 यवज॥ यवज॥ उं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥ उं हूं वं ऊं प्रणिच्छत्वा हा॥

इस ॥ उं लोला चनी यवकु ॥ रं व व क थ ॥ उं मा मा
म की ये व कु ॥ ख व व थ ॥ उं य या धु नी य व कु ॥
ह व थ थ ॥ उं मा मा य व कु ॥ उ व व थ ॥ उं य मा
क क म लो हा ॥ उं य हा क क ॥ उं य मा क का य ॥
उं वि प्रा क का य ॥ उं य वि नो ज्ञ य ॥ नी ल द धु य ॥
उं महा व ला य ॥ उं अ व ला य लो हा ॥ ए-ल-धु-धु

क









